NEERAJ®

Serving Education for Last 40 Years

भारत का इतिहास
(300 सी.ई. से 1206 तक)

(History of India : C. 300 to 1206)

B.H.I.C.-132

Chapter Wise Reference Book
Including Many Solved Sample Papers

Based on

C.B.C.S. (Choice Based Credit System) Syllabus of

I.G.N.O.U.

& Various Central, State & Other Open Universities

By: *Prieti Gupta*

NEERAJ PUBLICATIONS
(Publishers of Educational Books)

Mob.: 8510009872, 8510009878   E-mail: info@neerajbooks.com
Website: www.neerajbooks.com

MRP ₹ 280/-

Content

भारत का इतिहास : 300 सी.ई. से 1206 तक

(History of India From *C.* 300 to 1206)

Question Paper–June-2024 (Solved) 1

Question Paper–December-2023 (Solved) 1

Question Paper–June-2023 (Solved) 1

Question Paper–December-2022 (Solved) 1

Question Paper–Exam Held in March-2022 (Solved) 1-2

Question Paper–Exam Held in February-2021 (Solved) 1-2

Sample Question Paper–1 (Solved) 1

S.No.	Chapterwise Reference Book	Page

1. गुप्त साम्राज्य : उदय एवं विकास 1
(Rise and Growth of the Guptas)

2. अर्थव्यवस्था, समाज, संस्कृति एवं राजतंत्र व्यवस्था : गुप्त साम्राज्य 11
(Economy, Society, Culture and Polity : The Guptas)

3. पुष्यभूति एवं हर्ष साम्राज्य का उदय 22
(The Pushyabhutis and the Rise of Harsha)

4. दक्कन और दक्षिण भारत के राज्य 33
(Kingdoms in the Deccan and the South)

5. पल्लव, पांड्य और कलचुरी राज्य 41
(The Pallavas, The Pandyas and The Kalachuris States)

6. कदम्ब, बादामी के चालुक्य, चोल और होयसाल राज्य 57
(The Kadambas, The Chalukyas of Badami,
The Cholas and the Hoyasalas)

7. उत्तर-गुप्त काल में अर्थव्यवस्था और समाज 69
(Economy and Society in the Post-Gupta Period)

8. उत्तर-गुप्त काल में राज्य व्यवस्था, धर्म और संस्कृति 77
(Polity, Religion and Culture in the Post-Gupta Period)

9. राजपूतों का आविर्भाव 87
(Emergence of Rajputs)

10. राष्ट्रकूटों का आविर्भाव 100
(Emergence of Rashtrakutas)

11. अरब : हमले एवं विस्तार 107
(The Arabs : Invasions and Expansion)

12. महमूद गजनी और मोहम्मद गौरी : आक्रमण एवं प्रतिरोध 115
(Mahmud Ghazni and Mohammad Ghouri : Invasions and Resistance)

13. भूमि, राजस्व पद्धतियाँ और कृषीय संबंध : लगभग 700–1200 सी.ई. 125
(Land, Revenue Systems and Agrarian Relations : *C.* 700-1200 CE)

14. सामाजिक संरचना और लैंगिक सम्बन्ध : लगभग 700–1200 सी.ई. 133
(Social Structure and Gender Relations : *C.* 700-1200 CE)

15. कला, भाषा और साहित्य का विकास : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक 143
(Growth of Art, Language and Literature : *C.* 300 CE to 1206)

16. धर्म एवं धार्मिक प्रवृत्तियाँ : लगभग 300 सी.ई. से 1206 तक 153
(Religion and Religious Trends : *C.* 300 CE to 1206)

■■

Sample Preview of the Solved Sample Question Papers

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

QUESTION PAPER

June – 2024

(Solved)

भारत का इतिहास : 300 सी.ई. से 1206 तक
(History of India : *C.* 300 to 1206)

B.H.I.C.-132

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से कम-से-कम* **दो** *प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड-I

प्रश्न 1. गुप्त शासकों के अधीन प्रशासन का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत प्रशासन'

प्रश्न 2. हर्ष के सैन्य अभियानों के आधार पर उसके साम्राज्य की सीमा और विस्तार क्षेत्र पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-3, पृष्ठ-23, 'हर्ष के राज्य का विस्तार' तथा पृष्ठ-28, प्रश्न 5

प्रश्न 3. भारतीय धर्म के इतिहास के अध्ययन में भक्ति आंदोलन के महत्त्व का विश्लेषण कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-154, 'भक्ति आन्दोलन' तथा पृष्ठ-156, प्रश्न 2

प्रश्न 4. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पल्लव वास्तुकला

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-45, 'कला और वास्तुकला'

(ख) गुर्जर-प्रतिहार

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-91, प्रश्न 2

(ग) गुप्तोत्तर काल में भूमि-अनुदान

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-13, पृष्ठ-125, 'भूमि अनुदान' तथा पृष्ठ-127, प्रश्न 3

(घ) अजंता भित्तिचित्र

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-147, प्रश्न 3

खण्ड-II

प्रश्न 5. राजपूतों की उत्पत्ति से संबंधित विभिन्न वाद-विवादों पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-87, 'राजपूतों की उत्पत्ति : वाद-विवाद'

प्रश्न 6. लगभग 700-1200 सी.ई. के दौरान लैंगिक संबंधों (gender relations) का विस्तृत विवरण दीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-14, पृष्ठ-136, 'लैंगिक संबंध'

प्रश्न 7. गुप्त काल के दौरान संस्कृत साहित्य के विकास पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-15, पृष्ठ-145, 'साहित्य का विकास'

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियां लिखिए–

(क) तराइन (Tarain) के युद्ध

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-12, पृष्ठ-117, 'तराइन-युद्ध (1191 और 1192 सी.ई.), पृष्ठ-122, 'पृथ्वीराज के साथ युद्ध (1191-1192 ई.)

(ख) पांड्य राजवंश

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-5, पृष्ठ-42, 'पांड्य'

(ग) कन्नौज के लिए त्रिपक्षीय संघर्ष

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-9, पृष्ठ-93, प्रश्न 1

(घ) तंत्रवाद

उत्तर–संदर्भ–देखें–अध्याय-16, पृष्ठ-155, 'तंत्रवाद'

■■

QUESTION PAPER

December – 2023

(Solved)

भारत का इतिहास : 300 सी.ई. से 1206 तक
(History of India : *C.* 300 to 1206)

B.H.I.C.-132

समय : 3 घण्टे **अधिकतम अंक : 100**

नोट : *किन्हीं* ***पाँच*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए। प्रत्येक खंड से कम-से-कम* ***दो*** *प्रश्न कीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।*

खण्ड - I

प्रश्न 1. गुप्त शासकों के अंतर्गत प्रशासन की प्रकृति पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-2, पृष्ठ-11, 'गुप्त साम्राज्य के अंतर्गत प्रशासन'

प्रश्न 2. राजपूतों की उत्पत्ति पर वाद-विवाद की समीक्षा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-9, पृष्ठ-87, 'राजपूतों की उत्पत्ति पर वाद-विवाद'

प्रश्न 3. एक ऐतिहासिक स्रोत के रूप में चचनामा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-11, पृष्ठ-109, प्रश्न 2

प्रश्न 4. लगभग 700-1200 सी.ई. के दौरान जातियों के उद्‌भव एवं प्रसार की विवेचना कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-14, पृष्ठ-134, 'नई सामाजिक व्यवस्था : जातियाँ'

भाग - II

प्रश्न 5. गुप्तकाल के दौरान भाषा और साहित्य की वृद्धि एवं विकास का वर्णन कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-15, पृष्ठ-144, 'भाषा का विकास', पृष्ठ-145, 'साहित्य का विकास'

प्रश्न 6. गुप्त व गुप्तोत्तर समय में पौराणिक हिन्दू धर्म के उदय पर चर्चा कीजिए।

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-16, पृष्ठ-153, 'पौराणिक हिन्दू धर्म'

प्रश्न 7. भारतीय राजाओं के विरुद्ध तुर्की आक्रमणकारियों की सैन्य क्षमता को बढ़ाने वाले क्या कारक थे?

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-12, पृष्ठ-119, प्रश्न 4 तथा प्रश्न 5

प्रश्न 8. निम्नलिखित में से किन्हीं दो पर संक्षिप्त टिप्पणियाँ लिखिए–

(क) पल्लव वास्तुकला

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-5, पृष्ठ-45, 'कला और वास्तुकला'

(ख) राष्ट्रकूट साम्राज्य

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-10, पृष्ठ-100, 'राष्ट्रकूट साम्राज्य'

(ग) समुद्रगुप्त की प्रयाग-प्रशस्ति

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-1, पृष्ठ-2, 'समुद्रगुप्त' तथा पृष्ठ-7, प्रश्न 4

(घ) उत्तर-गुप्तकाल में कन्नौज का उदय

उत्तर–संदर्भ–देखें अध्याय-3, पृष्ठ-22, 'कन्नौज नए राजनीतिक केन्द्र के रूप में'

■■

Sample Preview of The Chapter

Published by:

NEERAJ PUBLICATIONS

www.neerajbooks.com

भारत का इतिहास : 300 सी.ई. से 1206 तक
(History of India : *C.* 300 to 1206)

गुप्त साम्राज्य : उदय एवं विकास
(Rise and Growth of the Guptas)

1

परिचय

गुप्त राजवंश या गुप्त वंश प्राचीन भारत के प्रमुख राजवंशों में से एक था। मौर्य वंश के पतन के बाद दीर्घकाल तक भारत में राजनीतिक एकता स्थापित नहीं रही। मौर्य वंश के पतन के पश्चात् नष्ट हुई राजनीतिक एकता को पुनः स्थापित करने का श्रेय गुप्त वंश को है। गुप्त साम्राज्य की नींव तीसरी शताब्दी के चौथे दशक में पड़ी तथा उत्थान चौथी शताब्दी की शुरुआत में हुआ। गुप्त वंश का प्रारम्भिक राज्य आधुनिक उत्तर प्रदेश और बिहार में था। गुप्त साम्राज्य का उदय तीसरी सदी के अन्त में प्रयाग के निकट कौशाम्बी में हुआ। गुप्त कुषाणों के सामन्त थे। लगता है कि गुप्त शासकों के लिए बिहार की अपेक्षा उत्तर प्रदेश अधिक महत्त्व वाला प्रान्त था, क्योंकि आरम्भिक अभिलेख मुख्यतः इसी राज्य में पाए गए हैं। यही से गुप्त शासक कार्य संचालन करते रहे और अनेक दिशाओं में बढ़ते गए। गुप्त शासकों ने अपना आधिपत्य अनुगंगा (मध्य गंगा मैदान), प्रयाग (इलाहाबाद), साकेत (आधुनिक अयोध्या) और मगध पर स्थापित किया।

अध्याय का विहंगावलोकन

राजनैतिक पृष्ठभूमि

उत्तर मौर्यकाल में उत्तर भारत में कुषाणों का राज्य और दक्कन में सातवाहनों का राज था, किंतु तीसरी शताब्दी सी.ई. के मध्य में ही इनकी शक्ति काफी कम हो गयी थी। चौथी शताब्दी सी.ई. के प्रारंभ में कोई बड़ा संगठित राज्य भारत में नहीं था, किंतु छोटी-छोटी शक्तियों का शासन था। इसी समय गुप्त वंश ने अपना साम्राज्य बनाना प्रारंभ किया।

उत्तर-पश्चिमी और उत्तर भारत

तीसरी शताब्दी सी.ई. के मध्य से पूर्व ही उत्तर पश्चिम ईरान में ससैनियों शासकों का कुषाण राजाओं पर प्रभुत्व स्थापित होना प्रारंभ हो गया था। इस तथ्य का प्रमाण अफगानिस्तान और पंजाब प्रांत में प्राप्त कुषाण राजाओं के सिक्कों से प्राप्त हुआ। इसके अतिरिक्त पंजाब, हरियाणा और राजस्थान के अन्य भागों से प्राप्त हुए पुराने सिक्के कई गणतंत्रीय राज्यों के अस्तित्व में होने का प्रमाण देते हैं।

पश्चिमी और मध्य भारत

उत्तर मौर्यकाल में क्षत्रप शासकों ने पश्चिमी भारत में शासन किया। जिसमें शकक्षत्रप रूद्रदमन क्षास्तन शाखा का प्रमुख शासक हुआ। उसने 304 सी.ई. तक राज किया। चौथी शताब्दी सी.ई. के अन्त में गुप्त शासक चन्द्रगुप्त द्वितीय ने क्षत्रप शासकों को पराजित करके अपना राज स्थापित किया। उत्तर पूर्वी महाराष्ट्र में तीसरी शताब्दी सी.ई. के मध्य विन्धयाशक्ति द्वारा वाकाटक एक शक्तिशाली राज का प्रारंभ हुआ। वाकाटक वंश ने गुप्त वंश के साथ वैवाहिक संबंध भी स्थापित किए।

दक्कन और दक्षिण भारत

सतवाहन राज्य के अंत के साथ दक्कन में कई राजवंशों का उदय हुआ, जिनमें इक्ष्वाकु, सलान्काय और कदम्ब राजवंश प्रमुख थे। कदम्ब वंश की स्थापना ब्राह्मण मौर्य सर्मन द्वारा की गई, जिसका उल्लेख तालगुण्डा शिलालेख से प्राप्त होता है। दक्षिण भारत के तमिलनाडु क्षेत्र में पल्लव विशेष शक्तिशाली राजवंश था, जिन्होंने 9वीं शताब्दी सी.ई. तक शासन किया। शिवंदावर्मन पल्लव वंश का प्रमुख शक्तिशाली शासक था। कांचीपुरम को पल्लवों ने अपनी राजधानी बनाया।

गुप्तों का प्रादुर्भाव

गुप्त वंश की वंशावली और प्रारंभिक इतिहास के बारे में अधिक जानकारी उपलब्ध नहीं है। गुप्त शब्द का प्रयोग सतवाहन शिलालेख में उल्लेखित 'शिवगुप्त' को वंश की उत्पत्ति के साथ जोड़कर किया गया, किंतु इस पर भी व्यापक मतभेद हैं। कुछ तर्कों के आधार पर पूर्वी उत्तर प्रदेश को गुप्त वंश की उत्पत्ति का स्थान

Neeraj Publications www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

माना जाता है। इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख में गुप्त वंश के प्रारंभिक शासकों की उपलब्धियों का उल्लेख व उन्हीं क्षेत्रों के विषय पर पुराणों में उपलब्ध विवरण गुप्त वंश की उत्पत्ति का स्थल पूर्वी उत्तर प्रदेश पर ही केंद्रित करते हैं। यह भी माना जाता है कि तीसरी शताब्दी सी.ई. के अंतिम दशकों में गुप्त शासक कुषाण शासकों की किसी शाखा के सहायक के रूप में शासन करते हों और उसके पश्चात चौथी शताब्दी सी.ई. में स्वतंत्र शासक बन गए हों।

गुप्त वंशावली

श्रीगुप्त, गुप्त वंश का प्रथम शासक और गुप्त वंश की स्थापना करने वाला शासक था। पूना से प्राप्त ताम्रपत्र में श्रीगुप्त को 'आदिराज' नाम से सम्बोधित किया गया है। श्रीगुप्त के बाद उसका पुत्र घटोत्कच गुप्त सिंहासन पर आसीन हुआ। कुछ अभिलेखों में घटोत्कच को गुप्त वंश का प्रथम राजा बताया गया है।

गुप्त वंश का पहला प्रसिद्ध शासक चंद्रगुप्त प्रथम हुआ। वह ऐसा प्रथम शासक था, जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की तथा स्वर्ण सिक्के जारी किये। इसके राज्यरोहण (319-320 ई.) के साथ गुप्त संवत् का आरंभ माना जाता है।

चंद्रगुप्त प्रथम ने गुप्त साम्राज्य का आरंभिक विस्तार किया, फिर अपनी स्थिति को मजबूत करने के लिये उसने कूटनीतिक पद्धति का भी सहारा लिया। उसने उत्तर भारत के प्रमुख राज्य लिच्छवि की राजकुमारी कुमार देवी के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किया। गुप्त संभवतः वैश्य थे, इसलिये क्षत्रिय कुल में विवाह करने से उनकी प्रतिष्ठा बढ़ी।

समुद्रगुप्त के प्रयाग अभिलेख में समुद्रगुप्त को 'लिच्छवि दौहित्र' अर्थात् लिच्छवि कन्या से उत्पन्न बताया गया है। चंद्रगुप्त प्रथम के पुत्र और उत्तराधिकारी समुद्रगुप्त (335-380 ई.) ने गुप्त साम्राज्य का अपार विस्तार किया।

समुद्रगुप्त

समुद्रगुप्त को हरिषेण लिखित प्रयाग प्रशस्ति में 'लिच्छवि दौहित्र' भी कहा गया है। समुद्रगुप्त महान विजेता था। 'प्रयाग स्तम्भ लेख' के श्लोक से उनकी सामरिक विजयों का प्रारंभ होता है। प्रयाग प्रशस्ति समुद्रगुप्त के दरबारी कवि हरिषेण ने संस्कृत में चम्पू शैली में लिखी। यह अभिलेख इलाहाबाद में अशोक स्तम्भ पर लिखा गया, जिसमे समुद्रगुप्त की एक योद्धा, राजा, विद्वान् तथा कवि के रूप में प्रशंसा की गई है।

कच्छ नाम से जारी किए गए कुछ सिक्कों की प्राप्ति ने एक नए विवाद को जन्म दिया, क्योंकि ये सिक्के समुद्रगुप्त के सिक्कों के समान हैं और कच्छ का नाम गुप्त शासकों की सूची में सम्मिलित नहीं है। इस संदर्भ में कुछ तर्क दिए गए हैं–

- समुद्रगुप्त के भाईयों ने विद्रोह करके सबसे बड़े भाई कच्छ को शासक बनाया किंतु उत्तराधिकार की लड़ाई में उसकी मृत्यु हो गयी।
- समुद्रगुप्त ने अपने भाई की स्मृति में इन सिक्कों को जारी किया।
- कच्छ समुद्रगुप्त का प्रारंभिक नाम था और दक्षिण विजय के उपरांत उसने समुद्रगुप्त नाम धारण किया।

प्रत्येक तर्क के समर्थन एवं विरोध में विवाद हैं। वैसे भी बहुत कम मात्रा में इन सिक्कों के पाए जाने के कारण यह माना जाता है कि अगर कच्छ का शासन भी था, तो वह बहुत कम समय के लिए था। अंततः समुद्रगुप्त ही सिंहासन का उत्तराधिकारी बना।

प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण

समुद्रगुप्त ने गुप्त वंश के प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण के लिए कई सैन्य अभियान किये। उसने विजयों की आक्रामक नीति अपनाई। समुद्रगुप्त के सभी सैन्य अभियानों का वर्णन हरिशेण की प्रयाग प्रशस्ति पर आधारित है।

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त अर्थात् उत्तरी भारत में और दक्षिणी भारत में भिन्न नीतियों का अनुसरण किया। उसने आर्यावर्त के राजाओं को पराजित करके उनका राज्य अपने राज्य में मिला लिया। उत्तरी भारत में पराजित होने वालें राजाओं के नाम रूद्रदेव, मतिला, नागदत्त, चन्द्रवर्मा, गणपति नाग, नागसेन, अच्चुत, नन्दी, बलवर्मा आदि थे। समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत में दो अभियान चलाए। दक्षिण भारत में समुद्रगुप्त द्वारा पराजित होने वाले 12 शासकों का नाम इस प्रकार है–कोसलराज महेन्द्र, महाकांतार के शासक व्याघ्रराज, मन्तराज, महेन्द्रगिरी, स्वामीदत्ता, संरपल्ला, नीलराज, हस्तीवर्मन, अग्रसेन, कुबेर व धनन्जय। प्रयाग प्रशस्ति के अनुसार दक्षिणापथ के राजाओं को जीतकर समुद्रगुप्त ने उन्हें मुक्त कर दिया। इसके अतिरिक्त वन क्षेत्र के सभी राज्य व सीमावर्ती राज्यों (दक्षिण-पूर्वी बंगाल, असम, नेपाल आदि) व गणतांत्रिक राज्यों (मालवा, योधेय, मद्रक आदि) पर भी समुद्रगुप्त ने विजय प्राप्त की। अन्य श्रेणी के राज्यों के शासकों ने स्वयं को समर्पित करके या अपनी पुत्रियों को विवाह के लिए प्रस्तुत करके समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की। इस श्रेणी में उत्तर-पश्चिम भारत के विदेशी शासक (अंतिम कुषाण और शक) विभिन्न द्वीपों (श्रीलंका अर्थात् सिंहल) आदि के शासक सम्मिलित हैं।

चन्द्रगुप्त द्वितीय

गुप्त अभिलेखों में चन्द्रगुप्त द्वितीय को समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी माना जाता है, किंतु कुछ अन्य साहित्यिक स्त्रोतों और सिक्कों के आधार पर रामगुप्त को समुद्रगुप्त का उत्तराधिकारी माना जाता है। विशाखादत्त के नाटक देवीचन्द्रगुप्तम में लिखा है कि रामगुप्त चन्द्रगुप्त द्वितीय का बड़ा भाई था, जिसने अपने राज्य को शकों से बचाने के लिए अपनी पत्नी ध्रुव देवी को शक राजा को समर्पित करने का निर्णय लिया। तब चन्द्रगुप्त भेष बदलकर शक राजा के शिविर में गया व शक राजा को मारकर अपने भाई की भी हत्या कर दी। चन्द्रगुप्त ध्रुव देवी से विवाह कर सिंहासन पर आसीन हुआ। इस समय तक गुप्त वंश में कई समस्याएं उत्पन्न हो गयी थी और गुप्त वंश का प्रभुत्व स्थापित करने के लिए चन्द्रगुप्त द्वितीय ने भी सैन्य अभियान चलाया। उसने शक नरेश रूद्रसिंह-III को

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

परास्त करके पश्चिमी भारत से शक क्षत्रप शासन का अंत किया और अपनी सीमाएं उत्तर पश्चिमी और पश्चिमी भारत तक फैलायीं। उसके नागों और वाकाटकों के साथ वैवाहिक संबंधों का उल्लेख भी अभिलेखों से प्राप्त होता है। चन्द्रगुप्त द्वितीय द्वारा शक क्षत्रप शासन का पूर्ण अन्त निम्न तर्कों पर आधारित हैं–

- इस काल के पश्चात शकों द्वारा जारी सिक्कों का प्राप्त न होना।
- शकों के सिक्कों की भांति ही चन्द्रगुप्त द्वारा कुछ विशेष चिह्नों को जोड़कर चांदी के सिक्के जारी करना।
- महरौली के लौह स्तम्भ पर अंकित अभिलेखों के अनुसार चन्द्रगुप्त ने सात नदियों के सिंधु क्षेत्र को पार कर बाहलिकाओं को पराजित किया। इसके अतिरिक्त बंगाल पर भी चन्द्रगुप्त की विजय का उल्लेख है।

चीनी यात्री फाह्यान बौद्ध धर्म के ग्रंथों की खोज में इसी समय में भारत आया। चन्द्रगुप्त का शासनकाल 415-416 सी ई. तक माना जाता है। चन्द्रगुप्त के राज में विद्वानों को संरक्षण प्राप्त था।

कुमारगुप्त–I

चंद्रगुप्त द्वितीय की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र कुमारगुप्त प्रथम सिंहासन पर आसीन हुआ। कुमारगुप्त प्रथम ने अश्यमेध यज्ञ करवाया था और महेन्द्रादित्य की उपाधि धारण की थी। कुमारगुप्त प्रथम के ही शासनकाल में नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना हुई थी। कुमारगुप्त प्रथम ने अपने पिता चंद्रगुप्त द्वितीय की ही भाँति राज्य को सुव्यवस्था और सुशासन से चलाया और अपने पिता के दिये साम्राज्य को ज्यों-का-त्यों ही बनाये रखा था।

कुमारगुप्त की आरम्भिक तिथि बिलसंड अभिलेख पर 415 ई. तथा उसके चांदी के सिक्कों पर उसकी अन्तिम तिथि 445 ई. प्राप्त होती है।

स्कन्दगुप्त

कुमारगुप्त की मृत्यु के पश्चात उसका उत्तराधिकारी पुत्र स्कंदगुप्त राजसिंहासन पर विराजमान हुआ। उसे काफी लोक हितकारी सम्राट माना गया है।

स्कंदगुप्त (455-467 ई.) का सबसे महत्त्वपूर्ण कार्य हूणों पर विजय था। यह हूणों का प्रथम भारतीय आक्रमण था। स्कंदगुप्त के समय हुआ यह आक्रमण हूणों की पूर्वी शाखा ने किया था तथा इसका नेता खुश नवाज था। इस विजय के संबंध में अधिकांश सामग्री 'भिंतरी स्तम्भ' अभिलेख से प्राप्त होती है। संभवत: इस पराक्रम के कारण ही उसने 'विक्रमादित्य' की उपाधि धारण की। उसने चंद्रगुप्त मौर्य के समय की बनी सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया। यह कार्य गिरनार नगर के महापौर पर्णदत्त के पुत्र चक्रमालित ने करवाया था।

स्कन्दगुप्त के बाद के गुप्त शासक

स्कंदगुप्त के पश्चात् गुप्त वंश का कोई भी राजा अपना प्रभुत्व इतना न बढ़ा सका, जिसकी जानकारी इतिहास के पन्नों में दर्ज हो, जिस कारण स्कंदगुप्त के उत्तराधिकारियों की स्पष्ट जानकारी उपलब्ध नहीं है।

गुप्त वंश का अंतिम शासक विष्णुगुप्त था। गुप्त वंश के पतन का कारण पारिवारिक कलह और बार-बार होने वाले विदेशी आक्रमण माने जाते हैं, जिनमें हूणों के आक्रमण को मुख्य कारण माना जाता है।

गुप्त साम्राज्य का विघटन

गुप्त साम्राज्य के पतन के मुख्य दो कारण इस प्रकार हैं–

1. विदेशी आक्रमण–गुप्त वंश की पारिवारिक कलह ने विदेशी ताकतों को आक्रमण करने का अलिखित न्यौता भेज दिया था। हालांकि शक और हूणों ने हमेशा आक्रमण की नीति अपनाई, जिसे स्कंदगुप्त तक के शासकों ने हमेशा विफल कर दिया था, लेकिन स्कंदगुप्त की मृत्यु के बाद यह संभव नहीं रह गया था। हूणों की सेना ने तोरमाण के नेतृत्व में 500 ई. के आस-पास भारत पर पुन: आक्रमण किया तथा गुप्त वंश मालवा और मध्य भारत को हारने से नहीं बचा सका। तोरमाण के पुत्र मिहिरकुल ने अपने पिता से भी अधिक तेजी और क्रूरता का रुख अपनाया और फिर से भारत पर आक्रमण कर दिया। इस प्रकार हूण और शक अपनी शक्ति का विस्तार करते रहे और गुप्त साम्राज्य सिमटता चला गया।

2. प्रशासनिक कमजोरियां–जिस गुप्त वंश का सूरज कुशल व दृढ़ प्रशासन व्यवस्था के कारण उगा था, वही प्रशासन इसके पतन का कारण भी बन गया। गुप्त शासनकाल में सामंती प्रथा वंशानुगत थी। राजतंत्र के विघटन से सामंतों को भी अपनी अलग शासन व्यवस्था बनाने का कारण मिल गया। परिणामस्वरूप विभिन्न सामंतों ने अपने इलाकों को एक अलग राज्य के रूप में प्रसिद्ध करके देश को छोटे-छोटे टुकड़ों में बांटकर चंद्रगुप्त प्रथम के प्रयासों को पूरी तरह से विफल कर दिया था। इस प्रकार जिस भारत को चंद्रगुप्त ने छोटे-छोटे टुकड़ों से जोड़कर एक देश बनाया था, वह अब पुन: अपनी मूल स्थिति में आ चुका था।

बोध प्रश्न

प्रश्न 1. रिक्त स्थानों को भरिये–

(अ) चौथी शताब्दी सी.ई. के प्रारंभ के समय उत्तर भारत में _____ छोटे राज्य थे।

(ब) चन्द्रगुप्त-I का _____ के साथ वैवाहिक संबंध था।

(स) प्रयाग प्रशस्ति में _____ की विजयों का वर्णन है।

उत्तर– (अ) बहुत से (ब) लिच्छवियों, (स) समुद्रगुप्त।

प्रश्न 2. गुप्त साम्राज्य के प्रसार के लिए समुद्रगुप्त द्वारा किए गए प्रयत्नों का वर्णन करें।

उत्तर–चंद्रगुप्त प्रथम के उपरान्त समुद्रगुप्त शासक बना। हरिषेण द्वारा रचित प्रयाग स्तंभ प्रशस्ति में चंद्रगुप्त प्रथम द्वारा समुद्रगुप्त को भरी सभा में राज्य प्रदान करने का वर्णन है। समुद्रगुप्त

www.neerajbooks.com

www.neerajbooks.com

को सिंहासन सौंपकर चंद्रगुप्त प्रथम ने संन्यास ले लिया। समुद्रगुप्त के सिक्कों से साम्य रखते हुए कुछ सोने के सिक्के इतिहासकारों को प्राप्त हुए हैं, जिन पर 'कांच' नाम उत्कीर्ण हैं। सिंहासन पर अपना निर्विवाद अधिकार प्राप्त करने के उपरान्त समुद्रगुप्त ने अपने पड़ोसी शासकों पर अपना आधिपत्य स्थापित किया। प्रयाग स्तम्भ लेख के सातवें श्लोक से उनकी सामरिक विजय का विवरण प्राप्त होता है। आर्यावर्त या उत्तरी भारत के जिन नौ शासकों को समुद्रगुप्त ने पराजित किया, उनमें से अच्युत नागसेन, गणमतिनाग प्रमुख हैं। इन विजयों के द्वारा मध्य प्रदेश या गंगा-यमुना दोआब पर समुद्रगुप्त ने अपनी सत्ता स्थापित कर ली। उसने इन शासकों का पूर्णतः उन्मूलन किया, क्योंकि अपने केन्द्रीय शासन की स्थिति को मजबूत किए बिना उसके लिए आगे अभियान चलाना संभव नहीं था। समुद्रगुप्त ने दक्षिणापथ की ओर विजय यात्रा आरंभ की, जिसके दौरान 12 नरेशों से उसका सामना हुआ। ऐसा प्रतीत होता है कि उसने दक्षिण अभियान के दौरान समुद्रगुप्त कांची तक पहुँच गया। समुद्रगुप्त ने सुदूरवर्ती दक्षिण के शासकों को अपने प्रत्यक्ष शासन के अन्तर्गत लाने का सफल प्रयास किया। अपनी विजय के उपरान्त समुद्रगुप्त ने अश्वमेध यज्ञ किया, जिसका परिचय सिक्कों और उसके उत्तराधिकारियों के अभिलेखों से प्राप्त होता है। उसके सिक्कों पर मुद्रित 'अप्रतिरथ', 'व्याघ्रपराक्रमः', 'मरात्रमांक' जैसे विरुद उसके गौरवमय जीवन चरित्र का स्पष्ट साक्ष्य प्रस्तुत करते हैं। उसका शासनकाल गुप्त संवत् 56 (375 ई. जब चंद्रगुप्त द्वितीय शासन कर रहा था) से पूर्व समाप्त हुआ होगा।

प्रसार एवं सुदृढ़ीकरण—समुद्रगुप्त ने विजयों की आक्रामक नीति को अपनाकर गुप्त साम्राज्य को मजबूत बनाया। डॉ. वी.ए. स्थिम ने उसे भारतीय नैपोलियन की उपाधि प्रदान की, क्योंकि वह अपनी विजयों के लिए प्रसिद्ध था। आर्यावर्त में उसने दिग्विजयी का कार्य किया, किंतु दक्षिणापथ या दक्षिण में उसने धर्मविजय का कार्य किया। इलाहाबाद स्तंभ अभिलेख में समुद्रगुप्त के अभियानों को चार भागों में विभक्त किया गया है। पहली श्रेणी में दक्षिण के बाहर राजाओं के विरुद्ध अभियान है। इन्हें समुद्रगुप्त ने जीता और फिर कृपा कर उन्हें स्वतंत्र कर दिया, इसे ही धर्म विजयी नीति कहा गया है। दूसरी श्रेणी में आर्यावर्त के नौ राजाओं के नाम हैं और इनके साथ कुछ अन्य राजा भी हैं, जिनके नाम नहीं दिये गये हैं। समुद्रगुप्त ने इन्हें पूर्णतः उखाड़ फेंका। इस नीति को प्रशस्ति में 'प्रसभोद्धरण' की संज्ञा दी गयी है। तीसरी श्रेणी में वनवासी असभ्य जातियों के राजा थे। उत्तर तथा दक्षिण भारत के बीच के आवागमन को सुरक्षित रखने के लिए इन्हें नियन्त्रण में रखना आवश्यक था। अतः समुद्रगुप्त ने इन्हें जीतकर पूर्णतः अपने नियंत्रण में कर लिया और चौथी श्रेणी में सीमावर्ती राज्य के प्रजातन्त्र हैं। इन राज्यों ने समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार कर ली। कुछ विदेशी शासकों के साथ समुद्रगुप्त के सम्बन्धों का उल्लेख किया गया है। एक चीनी स्रोत से पता चलता है कि श्रीलंका के राजा मेघवर्मन ने समुद्रगुप्त से 'गया' (बिहार) में एक बौद्ध मंदिर बनवाने की अनुमति माँगी।

प्रश्न 3. चौथी शताब्दी सी. ई. के प्रारंभ पर उत्तरी भारत में पांच छोटी राज्य शक्तियों की सूची बनाइए।

उत्तर—उत्तरी भारत में चौथी शताब्दी सी.ई. के प्रारंभ में पांच छोटी राज्यशक्तियां इस प्रकार हैं—यौधेय, मालवा, नाग, मुद्रस और कुषाण। बहुत शक्तिशाली यौधेय वर्तमान हरियाणा, मालवा वर्तमान राजस्थान और मुद्रस वर्तमान पंजाब में स्थित है। इन सभी गणतंत्रों को समुद्रगुप्त ने पराजित करके अपने राज्य में सम्मिलित किया। अफगानिस्तान, कश्मीर और पश्चिमी पंजाब से कुषाण राज के सिक्के प्राप्त हुए। नागाओं और कुषाणों के पतन के पश्चात समुद्रगुप्त एक शक्तिशाली राजा बना।

प्रश्न 4. चन्द्रगुप्त-II के सैनिक अभियानों का वर्णन कीजिए।

उत्तर—चंद्रगुप्त के अभियानों एवं सफलताओं की सूचनाएं कुछ निश्चित अभिलेखों, साहित्यिक स्रोतों और सिक्कों से निम्नलिखित प्रकार से प्राप्त हैं—

1. चंद्रगुप्त-II ने शक नरेश रुद्रसिंह-III को पराजित कर उसके राज्य का अधिग्रहण कर लिया। इससे पश्चिमी भारत में शक क्षत्रप शासन का अंत हो गया। गुजरात, काठियावाड़ तथा दक्षिण मालवा गुप्त साम्राज्य के अंग बन गए। सांची के पास विधागिरि की गुफाओं के अभिलेख तथा सांची के एक अभिलेख में चंद्रगुप्त-II, उसके अधीनस्थ राजाओं एवं सैनिक अधिकारियों का संदर्भ है, जिससे यह निष्कर्ष निकाला गया है कि अपने अभियानों की तैयारी के लिए वह कुछ समय के लिए पूर्वी मालवा में ठहरा।

2. महरौली के लौह स्तम्भ पर अंकित अभिलेख में, जो दिल्ली में कुतुबमीनार प्रांगण में स्थित है, के अनुसार चंद्रगुप्त ने सात नदियों के सिंधु क्षेत्र को पार कर वाहलिकाओं (इसकी पहचान बैक्ट्रिया के रूप में की गई है) को पराजित किया। कुछ विद्वानों ने चंद्रगुप्त-II की तुलना कालिदास के नाटक 'रघुवंश' के मुख्य पात्र रघु के साथ की है, क्योंकि रघु की विजयों की तुलना चंद्रगुप्त-II की विजयों से की जा सकती है।

3. महरौली अभिलेख में बंग (बंगाल) के शत्रुओं पर चन्द्रगुप्त की विजय का उल्लेख है।

निष्कर्षतः चंद्रगुप्त-II ने गुप्त साम्राज्य की सीमाओं को पश्चिम, उत्तर पश्चिम और पूर्वी भारत की सीमाओं तक बढ़ा दिया।

प्रश्न 5. गुप्त साम्राज्य के विघटन के कारणों को लिखिए।

उत्तर—भारत को सोने की चिड़िया बनाने वाले गुप्त वंश का इतिहास कई रूपों में उल्लेखनीय माना जाता है। कला, व्यापार व वाणिज्य तथा साहित्य क्षेत्रों में दो शताब्दियों तक स्वर्ण युग के रूप में चर्चित गुप्त वंश का पतन किसी एक कारण का परिणाम नहीं था। गुप्त वंश के संस्थापक श्रीगुप्त के वंशज समुद्रगुप्त तक स्वर्णयुग की पताका को लहराने में सफल रहे, लेकिन इसके बाद यह पताका धूमिल होने लगी और गुप्त वंश का पतन आरंभ होने

www.neerajbooks.com